UGC नियम का सनातन पर खतरा! आचार्य प्रशांत बोले- 'एक बार खिंची विभाजन की रेखा तो लौटना होगा मुश्किल', यह एक चिंगारी है

Reported by: Anjali Singh | Edited by: Brijendra Pratap Singh | Agency: Local18
Last Updated: February 09, 2026, 08:06 IST

Acharya Prashant : यूजीसी के नए नियम पर सुप्रीम कोर्ट की रोक के बाद आचार्य प्रशांत ने दिल्ली लिटरेचर फेस्टिवल में जाति विभाजन और सनातन धर्म में जाति विरोध पर खुलकर चर्चा की. उन्होंने कहा कि एक बार लकीर खींचने के बाद वापस आना मुश्किल हो जाएगा.

ख़बरें फटाफट
On Google

नई दिल्ली : यूजीसी के नए नियम ने पिछले दिनों समाज को दो हिस्सों में बांट दिया था. स्कूल से लेकर कॉलेज और यूनिवर्सिटी तक छात्र-छात्राओं में इसका आक्रोश साफ तौर पर नजर आ रहा था. यूजीसी के नए नियम पर फिलहाल सुप्रीम कोर्ट द्वारा रोक तो लग गई है, लेकिन दोबारा अगर इसी तरह के नियम आए तो कैसा विस्फोट समाज में होगा. इस पर सोशल मीडिया का मशहूर चेहरा और युवाओं की पहली पसंद आचार्य प्रशांत ने खुलकर अपनी बात रखी.

आचार्य प्रशांत दिल्ली में आयोजित 'दिल्ली लिटरेचर फेस्टिवल' में पहुंचे थे. इस दौरान उन्होंने लोकल 18 से खास बातचीत में कहा कि एक बार कड़ी विभाजन की रेखा अगर हमने बना दी. इसके बाद दोनों पक्षों को समझना बेहद मुश्किल हो जाता है. उसके बाद साधारण बातें भी साजिश जैसी लगने लगती हैं. फिर वास्तविक साजिश नजर नहीं आती है. लोगों को लगने लग जाता है कि हमारा दुश्मन कहीं बाहरी है.

अगर ऐसे हालातों तक एक बार हम पहुंच गए तो दो दिलों का मिलन मुश्किल हो जाएगा. यूजीसी का नया कानून या अधिनियम जैसे ही आया. तभी से संघर्ष पैदा हो गया. यह तो सिर्फ एक ट्रिगर है. इसके नीचे का बारूद हमें दिखाई नहीं देता. जो बहुत पहले से ही बिछा हुआ है.

ADVERTISEMENT

संबंधित खबरें

सुप्रीम कोर्ट का वह जज कौन था जिससे जवाहरलाल नेहरू ने मांगी थी माफी?

एशियन सिख गेम्स में रिया वर्मा का शानदार सफर, फाइनल में जीता सिल्वर मेडल

5 साल से जेल में बंद तसलीम अहमद को मिलेगी राहत? SC ने पुलिस को जारी किया नोटिस

कभी जहां बैठते थे महाराजा और प्रधानमंत्री, इतिहास की विरासत पर अब बाजार की नजर

ते के आधार पर बांटना बेहद गलत

आचार्य प्रशांत ने कहा कि जो बारूद पहले से ही बिछा हुआ है. उस पर जब छोटी सी बाहरी चिंगारी पड़ती है तो वह धधकने लगता है. कभी यह चिंगारी संयोजित होती है तो कभी प्रायोजित. हमें चर्चा उस बारूद पर करनी चाहिए. अगर यूजीसी का मुद्दा सुलझ भी गया तो फिर कोई और नया मुद्दा आ जाएगा. स्वर्ण, दलित अगड़े पिछड़े सबको बांटने के लिए जैसा की होता आया है. ऐसे नियम हमारे राष्ट्र, समाज और व्यक्ति के लिए घातक हमेशा बने रहेंगे. जब तक विभाजन रेखा को पूज्य मानकर हम लोग बनाए रखेंगे.

उन्होंने कहा कि यह हम कैसे तय कर सकते हैं कि जन्म से कोई व्यक्ति इधर का हो गया और कोई व्यक्ति उधर का हो गया. नाम में कुछ जुड़ जाने से उसके आधार पर कैसे हमने मान लिया कि कोई व्यक्ति किसी खास वर्ग और व्यवसाय का हो गया. उन्होंने यह भी कहा कि क्यों यह सब अब तक चला आ रहा है. क्यों इतने दिनों तक यूजीसी जैसे मामलों की बात चलती रही. क्योंकि हमने उसे धर्म का नाम दे दिया. अब धर्म में तो कोई बदलाव कर नहीं सकता. धर्म में जातिवाद के लिए कोई स्थान ही नहीं है.

केंद्रीय श्रुति ग्रंथ में जाति का हुआ है घोर विरोध

आचार्य प्रशांत ने कहा कि सनातन धर्म में जाति कैसे अनिवार्य हो गई. इतनी बड़ी विकृति कैसे पैदा हो गई. चलो अगर पैदा भी हो गई तो ढाई सौ साल से भारत में आधुनिक सुधार की प्रक्रिया चल रही है. जो कि राजा राममोहन राय के वक्त से शुरू

ADVERTISEMENT

आचार्य प्रशांत ने कहा कि हमें इसकी गहराई में जाना ही होगा और विवेचना जाति और धर्म पर करनी होगी. हिंदू धर्म जिसके अंदर केंद्रीय श्रुति ग्रंथ आते हैं. उसमें ऋषियों ने जाति को अस्वीकार किया है और तो और जाति की विरोध भी किया है, लेकिन खुद को हिंदू कहने वाले लोग इस बात को जानते नहीं हैं. इसलिए आपस में बंटे हुए हैं. यह बात अगर आम जन तक पहंच जाए तो भारत का बहुत भला होगा और हमें भारत का भला चाहिए.

टॉप वीडियो

THEATRE MODE सभी देखें

बरसात में लगाएं बागवानी, उद्य
पौधे और तकनी

लखौरी ईंटों से बनी इमारत अब टूटने की कगार पर,
कौन लेगा जिम्मेदारी?